अध्याय - ४

जनसंख्या का स्थानिक प्रतिरूप (SPATIAL PATTERN OF POPULATION)
जनसंख्या का स्थानिक प्रतिरूप

(Spatial Pattern of Population)

जनसंख्या वितरण का स्थानिक स्वरूप सामाजिक आर्थिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर का समचित प्रतिरूप दर्शाता है। सामाजिक गतिशीलता तथा संसाधनों का पास्तरिक सम्बन्ध अनेक ऐतिहासिक विन्दुओं पर मानवीय पक्षों को प्रभावित किया है। स्टील (1955) का विचार है कि जनसंख्या का स्थानिक वितरण किसी क्षेत्र की सामान्य अधिवासस्थल एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की घटनाओं द्वारा निर्धारित होती है। वास्तव में अनेक प्राचीन ऐतिहासिक गति विधियों से प्रभावित किसी क्षेत्र विशेष का जनसंख्या वितरण प्रतिरूप वर्तमान समय की अनेक चुनौतियों की अथाह सम्भावनाओं को समेटे रहती है। सामान्यतः किसी भी क्षेत्र की ग्रामीण जनसंख्या का वितरण उस क्षेत्र की भौगोलिक गुणों तथा आर्थिक दशाओं पर आधारित होता है। क्योंकि आर्थिक दृष्टि से मजबूत होने पर ही क्षेत्र विशेष की ओर मानव जीवन निर्वाह के लिए प्राकृतिक रूप में आकस्मित होता है। ज्ञात हो कि अध्ययन क्षेत्र बुन्देलखंड क्षेत्र में स्थित है, जहाँ ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक धार्मिक व साहित्यिक, गतिविधियों से पूरे क्षेत्र को प्रभावित किया है। उपयुक्त दृष्टि से ज्ञातीती जनपद की जनसंख्या का स्थानिक प्रतिरूप का अध्ययन अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

स्थानिक वितरण को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting the Spatial Distribution)

वस्तुतः अन्य क्षेत्रों की भौति बुन्देलखंड क्षेत्र की जनसंख्या प्रत्यक्ष रूप से उस
क्षेत्र विशेष की आर्थिक सम्भावनाओं का कारण और परिश्रम होती है। मानव प्राय: वहीं पर रहना पसंद करता है जहां की प्राकृतिक दशाएं सरलता पूर्वक जीवनयापन के लिए अनुकूल होती हैं। इस क्षेत्र की जनसंख्या का वितरण भी वहां के प्राकृतिक आर्थिक, सामाजिक एवं संस्कृतिक वातावरण से प्रभावित होती है। वर्तुः: जनसंख्या वितरण एक परिवर्तनशील पहलू है जो स्थान एवं समय के अनुसार परिवर्तित होता रहता है (क्लार्क 1966)। सामान्यतः जनसंख्या का स्थानिक वितरण प्रतिरूप एवं घनत्व को प्रभावित करने वाले निम्न लिखित कारक हैं।

भौतिक कारक (Physical Factors)

यह तो सर्वविदित है कि सम्पूर्ण विश्व में जनसंख्या का वितरण एवं जमाव एक जैसा नहीं है क्योंकि किसी भी क्षेत्र के भौतिक कारक वहां के मानव को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। मानवीय क्रियाकलापों के साथ-साथ जनसंख्या वितरण प्रतिरूप पर भी इनका स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगत होता है। भौतिक वातावरण की कठोरता के कारण अत्याधिक, शीत, उष्ण अनुपजाल, पर्वतीय, दलदली एवं आर्द उष्ण, आर्द कटिबंधों में जनरक्ष क्षेत्र बहुतायत मात्रा में पाये जाते हैं। वास्तव में प्रकृति मानव के लिए सामाजिक एवं आर्थिक क्रियाओं हेतु अवसर प्रदान करती है और मानव अपनी बुद्धि तथा प्राप्तिकी के द्वारा प्रकृति के बहुत से अवरोधको जो समाप्त करता हुआ अपना आर्थिक एवं सामाजिक विकास करता है। परन्तु मानव के वितरण के समन्ध में इन अवरोधको का पूर्ण रूप समाप्त होना सम्भव नहीं है। क्षेत्र में जनसंख्या के वितरण प्रतिरूप में गहरा प्रभाव डालने वाले भौतिक कारकों में क्षेत्रीय स्थलाकृतियां, जलवायु, मिट्टी, प्राकृतिक, वनस्पति भूगर्भीय जलस्तर, और खनिज सम्पूर्ण प्रमुख है।
क्षेत्रीय स्थलाकृति:— स्थल के प्रमुख स्वरूपों जैसे पहाड़, पठार, मैदान एवं ऊंचाई, अपवाह, भूमिगत जलस्तर आदि ऐसे कारक हैं जो जनसंख्या वितरण एवं उसके घनत्व को आदिकाल से ही प्रभावित करते आये हैं। अध्ययन क्षेत्र में स्थलाकृतिक स्वरूपों का जनसंख्या के वितरण एवं धनत्व में पूर्णतः प्रभाव दृष्टिगत होता है। जनपद के दक्षिणी उच्च भू-भागों में जहां 400 मीटर से अधिक ऊंचाई पाई जाती है एवं क्षेत्र की कुल जनसंख्या का केवल 5.0 प्रतिशत भाग निवास करता है।

जलवायु:— भौगोलिक कारकों में जलवायु सबसे अधिक व्यापक एवं स्थितिशाली तत्त्व है जो मानव की शारीरिक एवं मानसिक क्रियाओं पर गहरा प्रभाव डालता है। अतः मनुष्य उन्ही भागों में रहना पसंद करता है जहाँ की जलवायु उसके स्वास्थ एवं आर्थिक क्रियाओं के अनुरूप हो। जनसंख्या के वितरण में इसका प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में पड़ता है। यह अप्रत्यक्ष ढंग से मिठी वनस्पति तथा कृषि को भी प्रभावित करती है। सीमा क्षेत्र की जलवायु मानसूनी है जिसके फलस्वरूप यहाँ की ग्रीष्म ऋतु फाली तथा शीत ऋतु में औसतन ठंडक पड़ती है। तापमान एवं वर्षा दोनों ही प्रभावित करते हैं। मैदानी क्षेत्रों की तुलना में यहाँ की जनसंख्या घनत्व कम है। क्षेत्र का अधिकांश भाग पटारी है। अतः गर्मी के दिनों में पानी की कमी हो जाती है। पेयजल की आपूर्ति ट्रकों व टैक्सी द्वारा की जाती है। अतः जनसंख्या विरल है।

मिठी:— मिठी एक महत्वपूर्ण संसाधन है। जिसमें मानव जीविका का संचालन होता है। जनपद का सम्पूर्ण भाग कृषि प्रधान क्षेत्र के रूप में है। इसीलिए मिठीयों की उपयोगिता का अधिक महत्व हैं। क्षेत्र की 60 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्यों में निवेश है जो प्रत्यक्ष: उर्वर मिठी का ही परिणाम है। क्षेत्र का मध्य व पूर्वी भाग जो
कि विशेषत: जलोढ़ मिट्टी से युक्त है, जनसंख्या घनत्व अधिक पाया जाता है।
उसके अलावा काली मिट्टी वाले क्षेत्रों में जहाँ सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता है,
संघन जनसंख्या पायी जाती है। पहाड़ी एवं ऊँचा भूमि जो पूर्णत: कृषि के अयोग्य
है अन्य सुविधाएं उपलब्ध होने पर भी विरल रूप में जनसंख्या का वितरण पाया
जाता है। क्षेत्र के दक्षिणी उच्च भागों में उबड़-खाबड़ तथा पतारी भूमि में विरल
जनसंख्या प्रतिरूप दृष्टिगत होता है।
प्राकृतिक वनस्पति – प्राकृतिक वनस्पति सामान्यत: जलवायु पर निर्भर करती है।
अतः मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं पर जो प्रभाव पड़ता है वह पर्यक्ष रूप में जलवायु
का ही प्रभाव है। परंतु इसका भी प्राकृतिक संसाधन के रूप में मानवीय क्रिया
कलापों पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से प्रभाव पड़ता है। क्षेत्र में मात्र 6.5
प्रतिशत भाग पर वन पाये जाते हैं। जो कि जनपदीय क्षेत्रफल की तुलना में काफी
कम हैं।
जल प्रवाह एवं भूगर्भीय जलस्तर :– सिंचाई की सुविधा, जल विद्युत का उत्पादन
औरोगिक जल की पूर्ति पेयजल की सुविधा आदि इसके प्रत्यक्ष प्रभाव है। उपजाल
जलोढ़ मिट्टी का निक्षेपण तथा मल्टी व्यवसाय की प्रोत्साहन इसके अप्रत्यक्ष प्रभाव
हैं। जिनका मानवीय क्रिया कलापों से ही नहीं अपितु उसके स्थानाधिक वितरण से भी
गहरा समबन्ध है। क्षेत्र के उत्तरी पूर्वी एवं मध्य भागों में नदियां, छोटी छोटी जल
धाराओं एवं नालों के अत्यधिक कटाव के कारण वृहदाकार अधिवासों का विकास
सम्भव नहीं हो पाया है। जबकि क्षेत्र का उत्तरी निम्न भूमि क्षेत्र स्थान जनसंख्या
बाला भू-भाग है। इसी प्रकार भू-भूगर्भीय जलस्तर की उपलब्धता से भी जनसंख्या
वितरण का प्रतिरूप घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। यहीं कारण है कि बंगारा, चिरगांव
एवं बड़गांव विकास खण्डों में जनसंख्या सघनता अधिक है जबकि अन्य विकास
खण्डों में अपेक्षाकृत विरल जनसंख्या प्रतिरूप दृष्टिगत होता है।

खनिजः— निरंतर बढ़ती औद्योगिक प्रक्रियाएँ के फल स्वरूप जनसंख्या वितरण को प्रभावित करने वाले कारक के रूप में खनिज सम्पदा का महत्व बढ़ा है। क्योंकि क्षेत्र में कृषि संतुष्टावस्था में पहुंच जाती है, तो वहाँ के मानव के लिए जीवित का उपार्जन हेतु खनिज और उद्योग अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। झांसी जनपद इस क्षेत्र में अग्रगण्य है।

सांस्कृतिक कारक (Cultural Factors)

मानव अपनी क्षमता के अनुसार प्रकृति प्रदत्त सुअवसरों का अपने हित में सर्वाधिक उपयोग करता है। आधुनिक युग में तकनीकी शिक्षा के विकास के कारण सामाजिक भौतिक कारकों का महत्व कम होता जा रहा है। जिससे सामाजिक चित्तन तथा विवेक-नियत्त्रण की प्रक्रिया बढ़ती जा रही है। इस प्रकार किसी भी क्षेत्र की आर्थिक प्रगति में उत्पादक तत्वों तथा सामाजिक सर्वेश्व योगदान होता है। विभिन्न सांस्कृतिक कारकों में आर्थिक का ढंग प्राविधिक जागरूकता, सामाजिक संगठन एवं वृद्धि तथा सुविधायें प्रमुख हैं। (क्लार्क 1965) के अनुसार किसी भी क्षेत्र में जनसंख्या वितरण प्रतिरूप एवं सांस्कृतिक कारकों के मध्य गहरा सम्बन्ध पाया जाता है। जिनमें उस क्षेत्र की आर्थिक दशा आधुनिक प्राविधिक झांसी, सामाजिक संगठन महत्व पूर्ण होता है।

किसी क्षेत्र की आर्थिक क्षमता ही मुख्य रूप से मानव के बसाव को निर्धारित करती है क्योंकि क्षेत्र का आर्थिक विकास हो जाने पर जनसंख्या के भरण-पोषण की क्षमता में वृद्धि हो जाती है तथा ऐसे क्षेत्रों में रोजगार की सुविधायें बढ़ने लगती हैं और रोजगार के अवसरों की प्राप्ति जनसंख्या स्थानिक वितरण को प्रत्यक्षतः प्रभावित करती हैं। इसी कारण झांसी जनपद के झांसी, मऊरानीपुर तथा मोठे नगरों
में औद्योगिक विकास होने के कारण जनसंख्या का घनत्व अधिक है जबकि क्षेत्र के अन्य केंद्रों में जनसंख्या घनत्व कम पाया जाता है। इसी प्रकार जनसंख्या वितरण को स्थानीय रीतिरिवाज भी प्रभावित करते हैं जिनमें संयुक्त परिवार प्रथा, बाल विवाह, सन्तान उत्पादन की आवश्यकता, परिवार के सदस्यों को पैतृक भूमि के समीप रखने की प्रवृत्ति आदि प्रमुख हैं।

क्षेत्रीय सम्बन्धमयता :- किसी क्षेत्र की जनसंख्या का स्थानिक वितरण वहां आवागमन के साधनों के प्रसार से भी प्रभावित होती है। अध्ययन क्षेत्र का झांसी नगर एक विकसित केंद्र है जहाँ जनसंख्या सकेन्द्रण सबसे अधिक है यह केंद्र रेल यातायात द्वारा दिल्ली मुंबई एवं कोलकाता आदि अनेक सीधे सम्पर्क में है तथा आस पास के क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों के आधार पर उस नगर का पर्याप्त औद्योगिक, सांस्कृतिक व सामाजिक विकास सम्भव हुआ है। इसके अलावा जनसंख्या वितरण का ऐतिहासिक राजनीतिक व धार्मिक कारक भी प्रभावी होते हैं। उपयुक्त विश्लेषण से यह भलीमाति स्पष्ट है कि जनसंख्या का वितरण धौतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक कारकों द्वारा प्रभावित होता है।

जनसंख्या का स्थानिक वितरण (Spatial Distribution of Population)

झांसी जनपद में जनसंख्या वितरण पर वस्तुत: आधारभूत धौतिक कारकों एवं जलवायु व विशेषताओं प्राकृतिक संसाधनों बाजार एवं परिवहन की सुविधाओं का सम्मिलित प्रभाव स्पष्ट रूप से परिवर्तित होता है। क्षेत्र की जनसंख्या का वितरण को सारिणी संख्या 4.1 व चित्र संख्या 2.6 में दर्शाया गया है जिसके अवलोकन से स्पष्ट होता है कि यहां जनसंख्या का सर्वाधिक सकेन्द्रण जनपद के बड़ागा०, बबीना व मऊरानीपुर विकासखंडों में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त बेतवा नदी के तटवर्ती मेदानी क्षेत्र में भी जनसंख्या का सकेन्द्रण देखने को मिलता है। बागौर एवं विराग० विकास खंडों में अपेक्षाकृत निम्न स्तरीय जनसकेन्द्रण पाया जाता है।
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.सं.</th>
<th>विकासखण्ड</th>
<th>कुल जनसंख्या</th>
<th>ग्रामीण</th>
<th>योग</th>
<th>नगरीय</th>
<th>योग</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td>पुरुष</td>
<td>स्त्री</td>
<td>पुरुष</td>
<td>स्त्री</td>
</tr>
<tr>
<td>1</td>
<td>मोठा</td>
<td>680.85</td>
<td>1,46043</td>
<td>64094</td>
<td>54530</td>
<td>118624</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>चिरगाँव</td>
<td>555.32</td>
<td>1,18719</td>
<td>56469</td>
<td>48344</td>
<td>104813</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>बामोर</td>
<td>827.85</td>
<td>1,17432</td>
<td>56059</td>
<td>47008</td>
<td>103064</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>गुर्सराय</td>
<td>734.58</td>
<td>1,31546</td>
<td>56380</td>
<td>47533</td>
<td>103913</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>बंगरा</td>
<td>533.68</td>
<td>1,29847</td>
<td>59559</td>
<td>51505</td>
<td>111064</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>मधुरानीपुर</td>
<td>550.36</td>
<td>1,76803</td>
<td>52937</td>
<td>54183</td>
<td>117120</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>बबीन्दा</td>
<td>739.62</td>
<td>1,52677</td>
<td>59489</td>
<td>50540</td>
<td>110029</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>बड़ा गाँव</td>
<td>521.50</td>
<td>4,69447</td>
<td>51239</td>
<td>43473</td>
<td>94712</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>झोंसी जनपद</td>
<td>566.518</td>
<td>1,429698</td>
<td>466226</td>
<td>397116</td>
<td>863342</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत: सांख्यकीय पत्रिका, १६६६ स प्राप्त अंकों पर आधारित।
इसके अलावा गुर्मस्रोत बंगरा तथा मोट विकास खण्ड में मध्यम जनसंख्या संकेतिक्षण दृष्टिगत होता है। क्षेत्र में जनसंख्या वितरण को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। जो कि निम्नलिखित है।

(क) सघन जन वितरण क्षेत्र

(ख) मध्यम जन वितरण क्षेत्र

(ग) विरल जन वितरण क्षेत्र

सघन जन वितरण क्षेत्र :- अध्ययन क्षेत्र में इस श्रेणी के अन्तर्गत बड़ाबों, बबीना, मऊराणीपुर तथा वेतवा के तटवर्ती क्षेत्र के भाग आते हैं। समतल भूमि उवर्त रेखाटी उच्च जलस्तर मानव जीवन के लिए उपयुक्त जलवायु के अलावा भूमि उपयोग जिसमें शास्त्रिय प्रतिरूप सुविधायें उपयोग तथा मानव जीवन की सुरक्षा आदि विभिन्न कारकों में ग्रामीण जनसंख्या के सघन बसाव को आकृष्ट किया है। जनपद के दक्षिणी पश्चिमी क्षेत्र में जनपद व मण्डल मुख्यालय जांसी नगर स्थित है फलस्वरूप सघन जनसंख्या निवास करती है। जनपद के मऊराणीपुर विकास खण्डों में स्थानीय हथकरघों तथा औद्योगिक विकास व प्रमुख अनाज मण्डी होने के कारण जनसंख्या का सघन बसाव देखने को मिलता है। उसके अतिरिक्त क्षेत्र के प्रमुख सेवा केन्द्र होने के कारण, बबीना, राणीपुर व बड़ाबों केन्द्रों में भी जनसंख्या का बसाता अति सघन है।

मध्यम जन वितरण क्षेत्र :- इस श्रेणी के अन्तर्गत जांसी जनपद में मोट, बंगरा एवं गुर्मस्रोत विकास खण्ड शामिल किये जा सकते हैं। इन विकास खण्डों में जनसंख्या का वितरण लगभग एक समान है। इस क्षेत्र को उबरक क्षमता के आंकलन से पता
चलता है कि इसमें मुख्यतः गेहूं, चना, दालों एवं अन्य खाद्यानों की कृषि की जाती है। सिंचाई की व्यवस्था के लिए नहरें ही एक मात्र साधन हैं।

इसके अतिरिक्त यातायात व स्वास्थ्य सुविधाओं की सहन सुलभता वाले गुरुसरौय, समधर, कटेश, टोडी फतेहपुर आदि केन्द्रों में भी जनसंख्या का वितरण अपेक्षाकृत कम विरल है। यहां के समधर, मोठे गुरुसरौय टोडी फतेहपुर कटेश इत्यादि नगरीय केंद्रों में हैं जिनकी जनसंख्या क्रमशः 16895, 10624, 17886, 9747 तथा 5993 है। ये सभी केंद्र अपने क्षेत्र के लेवा केंद्र हैं।

विरल जन-वितरण क्षेत्र :- अध्ययन क्षेत्र के चिरगों एवं बामोर विकास खण्डों में जन-वितरण विरल है। इन क्षेत्रों में अविकसित कृषि व्यवसाय, एवं औद्योगिकीकरण बहुत ही सीमित है। परिणामतः यह विकास खण्ड विरल जन-वितरण क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। उस विरल जन वितरण क्षेत्र में भी असमानता देखने को मिलती है। 

अत्याधिक उबड़-खाबड़ व पहाड़ी क्षेत्रों में अति विरल जन वितरण मिलता है।

निष्कर्ष: यह कहा जा सकता है कि क्षेत्र में जनसंख्या संकेतन साधन पदमें तथा पूर्वी दक्षिणी भागों में अधिक है। वेतन नाइन्च क्षेत्र के दक्षिणी भाग में जनसंख्या के उच्च संकेतन का कारण ज्ञानी नगर की केंद्रीय स्थिति को माना जा सकता है जो जननय एवं संभागी मुख्यालय होने के कारण साथ साथ परिवहन का प्रमुख नगरीय केन्द्र भी है।

जनसंख्या घनत्व (Poulation Density)

जनसंख्या घनत्व प्रति इकाई क्षेत्रफल पर निवास करने वाली जनसंख्या का द्योतक होता है। चांदना एवं सिद्धू (1980) मुख्य भूमि के मापन अनुपात: जो किसी जनसंख्या अध्ययनों के आधारमूल किन्तु होते हैं— (डेम्स्क, 1970)। जनसंख्या का
वितरण एवं घनत्व एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। इनका सम्बन्ध भौतिक वातावरण से होता है। जो मनुष्य के नकारात्मक एवं सकारात्मक (कोर्ड, 1953) सम्बन्धों को इंगित करते हैं। किसी भी क्षेत्र के आधिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के लिए योजनाओं के निर्माण में जनसंख्या घनत्व की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

क्योंकि जनसंख्या घनत्व किसी भी क्षेत्र के संसाधन पर आधारित जनसंख्या के भार को प्रदर्शित करता है (द्रिवंत, 1953)। वस्तुतः जनसंख्या का अध्ययन किसी क्षेत्र के भौगोलिक विश्लेषण के लिए अति महत्वपूर्ण है क्योंकि जनसंख्या के वितरण प्रतिरूप की सामाजिक स्थिति का स्पष्ट करने के लिए यही एक आसान उपाय है।

जनसंख्या के घनत्व के लिए कई दृष्टिकोण अपनाये जाते हैं। जिसमें आंकिक घनत्व कार्यक्रम जनसंख्या घनत्व, कृषि घनत्व तथा प्रोशण घनत्व मुख्य हैं। तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए उपयुक्त सभी घनत्वों का गणना एवं उनके वितरण का उल्लेख यहां किया जा रहा है।

आंकिक घनत्व (Arithmatical Density)

आंकिक घनत्व किसी क्षेत्र विशेष के कुल जनसंख्या तथा उसके कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का सम अनुपातक प्रतिफल है। भूगोलविदों एवं अन्य सामाजिक विज्ञान वैज्ञानिक द्वारा इसी घनत्व को उपयोग में लाया जाता है क्योंकि विश्व के अधिकांश भागों की जनसंख्या तथा क्षेत्रफल सम्बन्धित आंकड़ों की सुलभता है।

यद्यपि मानव एवं भूमि के पारस्परिक सम्बन्धों को अवकल करने के लिए यह एक सरल तरीका है तथापि इससे क्षेत्र विशेष की वास्तविक स्थिति एवं जनसंख्या की आधिकारिक दशाओं का ज्ञान नहीं हो पाता है। साथ ही यदि किसी क्षेत्र का एक नाग सघन जनसंख्या बाला है और शेष भाग जनसूत्य है, तो ऐसी दशा में जनसंख्या घनत्व की वस्तुस्थिति स्पष्ट रूप से प्रदर्शित नहीं हो पाती है। आंकिक घनत्व कुछ
हद तक उन क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण है जहाँ विरल जनसंख्या पायी जाती है। क्षेत्र की जनसंख्या का आंकिक घनत्व सारणी 4.2 एवं चित्र 4.1 A में प्रदर्शित किया जा रहा है।

सारणी 4.2

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.सं.</th>
<th>क्षेत्र / विकास खण्ड</th>
<th>क्षेत्रफल</th>
<th>कुल जनसंख्या</th>
<th>घनत्व</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>मोठे</td>
<td>680.86</td>
<td>146043</td>
<td>215</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>चिरगाँव</td>
<td>555.32</td>
<td>118719</td>
<td>214</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>बामोर</td>
<td>827.85</td>
<td>117432</td>
<td>142</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>गुरुसराय</td>
<td>734.58</td>
<td>131546</td>
<td>171</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>बंगरा</td>
<td>533.68</td>
<td>129847</td>
<td>243</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>महाराष्ट्रपुर</td>
<td>550.36</td>
<td>176803</td>
<td>322</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>बबीना</td>
<td>739.62</td>
<td>152777</td>
<td>206</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>बड़ा गाँव</td>
<td>521.50</td>
<td>469421</td>
<td>900</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>झाँसी जनपद</td>
<td>566.518</td>
<td>1429698</td>
<td>302</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत : जिला सूचना केंद्र से प्राप्त आंकड़ों द्वारा संग्रहित।

सारणी संख्या 4.2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि क्षेत्र में जनसंख्या का आंकिक घनत्व 302 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है जो कि 70 प्रो के 471 व्यक्ति / प्रति वर्ग किमी की तुलना में बहुत कम है। क्षेत्र में जनसंख्या के निम्न घनत्व का मुख्य कारण यहां का असमतल धरातल, अविकसित कृषि व्यवसाय, अपराधिय सिंचाई सुविधायें और पर्याप्त मात्रा में ओढ़ोगीकरण का अभाव हैं। जनसंख्या घनत्व के आधार पर सम्पूर्ण क्षेत्र को तीन भागों में बाँटा जा सकता हैं।
(1) उच्च जन घनत्व क्षेत्र (300 व्यक्ति/प्रति वर्ग किमी. से अधिक);
(2) मध्यम जन घनत्व क्षेत्र (200 से 300 व्यक्ति/प्रति वर्ग किमी.)
(3) निम्न जन घनत्व क्षेत्र (200 व्यक्ति वर्ग किमी. से कम)

उच्च घनत्व क्षेत्र :- उच्च जन-घनत्व क्षेत्र के अन्तर्गत बड़गौंव व मऊरानीपुर विकासखंड आते हैं। इनका आंकिक घनत्व क्रमशः 900 व 322 है। इन विकास
खण्डों में अधिक जन घनत्व का प्रमुख कारण कृषि व सिवाई सुविधाओं का विकास
है। इसके अलावा बड़गौंव विकासखंड में झांसी नगर सम्मिलित होने के कारण
सर्वाधिक जन घनत्व कम पाया जाता है। औद्योगिक व्यापारिक व परिवहन सुविधाओं
की प्रगति के परिणाम स्वरूप यह उच्चजन घनत्व वाला क्षेत्र है।

मध्यम घनत्व क्षेत्र :- इसके अन्तर्गत झांसी जनपद के चार विकास खण्ड बंगरा
(243) बर्मीना (205) मोठ (215) तथा चिरगौंव (211) आते हैं। वस्तुतः यहां कृषि
व्यवसाय मध्यम स्तरीय है। मोठ के अलावा अन्य व्यवसायिक केंद्रों पर विकास कम
हुआ है। हां इतना अवश्य है कि यह चारों विकास खण्ड प्रमुख बाजारीय केंद्र हैं,
जो आस-पास की ग्रामीण जनता को विभिन्न सेवाओं प्रदान करते हैं।

निम्न घनत्व क्षेत्र :- इसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र के गुरसंसाय एवं बामोर विकासखंड
आते हैं, जिनका जन घनत्व क्रमशः 170 तथा 142 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। यह
अत्याधिक अधिकतात्विक क्षेत्र है। इन क्षेत्रों की भूमि अधिक उपजाऊ नहीं है। पिछड़ी
एवं परस्मार्ग तृषि व्यवसाय, यातायात के साधनों का अभाव तथा अधिकतात्विक
व्यवसाय तन्त्र के कारण इस क्षेत्र में निम्न जन घनत्व पाया जाता है।

कार्यकिल्ला घनत्व (Functional Density)

यह किसी क्षेत्र की कुल जनसंख्या तथा कृषि भूमि के मद्ध्य का अनुपात है, जो
कृषित भूमि के प्रतिवर्ग शिर्मि. में जनसंख्या के अनुपात को व्यक्त करता है (बांदना 
वंस, सिंधू 1980। इस प्रकार यह घनत्व कृषित क्षेत्र पर जनसंख्या के दबाव को 
प्रदर्शित करता है। इसमें कृषि के अवयव भूमि को छोड़कर घनत्व निकाला जाता 
है। इस घनत्व का विशेषण उन क्षेत्रों के लिए विशेष उपयोगी है जो कि नुक्स रूप 
से कृषि प्रधान क्षेत्र हैं। ज्ञानी जनपद के कार्यकृत घनत्व को सारणी संख्या 4.3 तथा 
चित्र संख्या 4.1 B में देखा जा सकता है। सारणी व चित्र से स्पष्ट है कि क्षेत्र का 
भूकार्यक घनत्व 455 व्यक्ति प्रतिवर्ग शिर्मि. है। क्षेत्र में सर्वाधिक कार्यकृत घनत्व 
ज्ञानी, बड़गाँव विकासखण्ड में है। ज्ञानी नगरीक केन्द्र के औद्योगिक प्रतिष्ठानों व 
विभिन्न संस्थाओं में रोजगार के अवसरों एवं अन्य सुविधाओं की उपलब्धि के कारण 
यहां कृषित भूमि के कम होने पर भी जनसंख्या का अन्याधिक जमाव पाया जाता हैं।

सारणी संख्या 4.3

बुन्देल खंड क्षेत्र में कार्यक, कृषि एवं पोषण घनत्व 1991

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.सं.</th>
<th>विकास खण्ड</th>
<th>कार्यकृत घनत्व</th>
<th>कृषिगत घनत्व</th>
<th>पोषणघनत्व</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>मोठ</td>
<td>284</td>
<td>174</td>
<td>207</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>चिरगाँव</td>
<td>324</td>
<td>188</td>
<td>250</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>बामोर</td>
<td>235</td>
<td>120</td>
<td>203</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>गुरसराय</td>
<td>251</td>
<td>141</td>
<td>191</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>बंगरा</td>
<td>396</td>
<td>208</td>
<td>281</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>मऊरानीपुर</td>
<td>380</td>
<td>213</td>
<td>252</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>बबीना</td>
<td>557</td>
<td>149</td>
<td>328</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>बड़ा गाँव</td>
<td>205.5</td>
<td>182</td>
<td>296</td>
</tr>
<tr>
<td>9</td>
<td>जनपद ज्ञानी</td>
<td>455</td>
<td>172</td>
<td>242</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत: जिला सांख्यविज्ञानीय पत्रिका, 1996 से प्राप्त आंकड़ों द्वारा संगणित।
JHANSI DISTRICT
DISTRIBUTION OF POPULATION

ARITHMETICAL DENSITY

- 150 or Less
- 151-225
- 226-300
- 301-375
- Above 375

FUNCTIONAL DENSITY

- Below 300
- 301-450
- 451-600
- Above 601

Fig 4.1
इस घनत्व का सबसे बड़ा दोष यह है कि इसमें सम्पूर्ण अधिकृत भूमि को अनुपादक मान लिया जाता है जबकि वास्तविकता यह है कि इसमें सम्पूर्ण अकृष्टि भूमि का भी विभिन्न रूपों में उपयोग किया जाता है तथा अनेक आर्थिक लाभ प्राप्त किये जाते हैं। इसके अलावा इस घनत्व में यह भी मान लिया जाता है कि सम्पूर्ण कृषित क्षेत्र समान गुणों का होता है। जिसमें प्रत्येक रूप से कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। जबकि वास्तव में विभिन्न कृषि क्षेत्रों की भूमि अलग-अलग उच्चता—लवल्वती है और उत्पादन क्षमता और वहन क्षमता भी भिन्न होती है। कुछ लोग कार्यक कृषि घनत्व की आलोचना इस आधार पर करते हैं कि कृषि प्रधान क्षेत्रों में भी सम्पूर्ण जनसंख्या केवल कृषि भूमि पर ही निर्भर नहीं होती है। बल्कि अन्य व्यवसायों में भी संलग्न रहती है जबकि इसे कृषि पर आधारित मान लिया जाता है। सार्वजनिक 4.3 के अनुसार से स्पष्ट है कि उच्च (235 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.) कार्यक्षीत्र बड़ा गाँव विकास खंड में जबकि निम्न कार्यक्षीत्र घनत्व (205.5 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.) बांध, विकास खंड में पाया जाता है। चिरगाँव बंगाल तथा माऊरानीपुर में भूत: 324, 396, व 354 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. कार्यक्षीत्र घनत्व मिलता है। बबीना विकास क्षेत्र 557 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. कार्यक्षीत्र घनत्व पाया जाता है।

कृषिगत घनत्व (Agricultural Density)

किसी क्षेत्र की कृषि पर आधारित जन संख्या और कृषि भूमि के अनुपात को कृषि घनत्व कहते हैं। जिसमें कृषित भूमि के प्रति वर्ग किमी. में कृषि पर आधारित जनसंख्या के अनुपात को व्यक्त किया जाता है (चंदना एवं सिद्धू, 1950)। शामिल (1975) के अनुसार कृषि जनसंख्या घनत्व एक निरंतर समय पर प्रति इकाई गत भूमिपर कृषि में संलग्न जनसंख्या का दौर करता है। वस्तुतः जिस क्षेत्र में कुल जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि व्यवसाय में लगा हो, वहाँ के लिए कृषि घनत्व
मानव भूमि सम्बन्ध को जानने का एक महत्वपूर्ण एवं उपयोगी तरीका है। अध्ययन क्षेत्र में कृषि घनत्व की गणना करने के लिए यहां की ग्रामीण जनसंख्या को ही कृषि पर आधारित जनसंख्या के रूप में मान लिया गया है क्योंकि झांसी जनपद जैसे कृषि प्रधान क्षेत्र में दोनों प्रकार की जनसंख्या लगभग एक समान हैं। इसका कारण यहां की लगभग सम्पूर्ण ग्रामीण जनसंख्या का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर आधारित होना है।

अध्ययन क्षेत्र के कृषि घनत्व की सारिणी संख्या 4.3 में प्रदर्शित किया गया है। जिससे स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र का कृषि घनत्व औसतन 172 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. हैं। क्षेत्र में सबसे अधिक कृषि घनत्व मऊरानीपुर विकासखंड में 213 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. तथा सबसे कम कृषि घनत्व 120 व्यक्ति प्रतिवर्ग किमी. बामोर विकासखंड में पाया जाता है। (चित्र संख्या 4.2 A) उसके अतिरिक्त विकास खण्ड बंगाल में कृषि घनत्व 208 प्रतिवर्ग किमी. है। इन क्षेत्र में उच्च कृषि घनत्व पाये जाने का प्रमुख कारण अनुवर्तक भूमि, सिंचाई सुविधाओं का अभाव और कृषि विकास की प्रतिकूल दशाओं की उपलब्धता है। दूसरे क्रम में वे विकासखंड शामिल किये गये हैं जिनका कृषि घनत्व 200 से कम किन्तु 150 से अधिक है। इनमें चिरगाँव बढ़गाँव 182 तथा मोठ आते हैं। जिनका कृषिगत घनत्व क्रमांक: 188,182, व 174 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी हैं। बवीना एवं गुरसिंघाय विकास खण्ड में कृषि घनत्व क्रमांक: 149 तथा 141 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. पाया जाता है। उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र जनसंख्या के अधिक कारकों को वहन कर रहा है। अतः क्षेत्र की कृषि में सुधार कर प्रगतिशील कृषि की विभिन्न तकनीकों का प्रयोग करके यहां की आर्थिक शिर्षता को विकसित किया जा सकता है।

प्रोषण घनत्व (Nutrition Density)

जब किसी क्षेत्र की जनसंख्या तथा उस क्षेत्र में बोई जाने वाली भूमि की
उत्पादकता का अनुपात ज्ञात किया जाता है, उसे पोषण घनत्व कहते हैं। दूसरे शब्दों में कृषि भूमि की प्रत्येक ईकाई से जितने व्यक्ति को भोजन प्राप्त होता है, उन व्यक्ति की संख्या को पोषण घनत्व के रूप में माना जाता है। यह पोषण घनत्व ग्रामीण जनसंख्या तथा बोए गए क्षेत्रकल के अनुपात को प्रदर्शित करता है। मानव एवं भूमि उपयोग की गणना करने वाली अन्य विधियों की तुलना में पोषण घनत्व एक स्वच्छ एवं परिभाषित विधि है। किसी भी क्षेत्र के घनत्व की गणना में यह घनत्व भू-आकृतिक कर्पिक घनत्व की ही भूति महत्वपूर्ण है। जिस क्षेत्र के लोगों को जीविका-पार्जन का मुख्य स्रोत कृषि है, उस भूभाग में मानव और भूमि के मध्य के अनुपात का सही मापन इसी घनत्व के द्वारा होता है। जांत्रिक जनपद के पोषण घनत्व को सारिणी 4.3 तथा चित्र संख्या 4.2 B में प्रदर्शित किया गया है। पोषण घनत्व के विश्लेषण से स्पष्ट है कि मोठे विकासखण्ड पोषण घनत्व की वृद्धि से साझारण वर्ग में आता है जबकि उच्चवर्ग के अन्तर्गत बाबीना का स्थान है। मध्यम पोषण घनत्व के अन्तर्गत चार विकासखण्ड (मोठे, चिरगाँव, बाबी, ढांगाबं) आते हैं।

जनपद का कुल पोषण घनत्व 242 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है।

नगरीकरण (Urbanization)

नगरीकरण की प्रवृत्ति किसी भी क्षेत्र के आर्थिक य सामाजिक विकास की सूचक होती है। यह औद्योगिकरण प्रक्रिया की उत्प्रेरक तथा विकास का निर्देशक है।

नगरीकरण का अर्थ कुल नगरीय जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत में उत्तरायत वृद्धि अथवा कुल जनसंख्या दृष्टांतों से यह स्पष्ट है कि नगरीकरण नगरों की जनसंख्या में स्वाभाविक वृद्धि के आधार पर सम्भव नहीं है। अत: नगरीकरण की गति तथा स्तर कृषि कायम से कृष्टीकरण– आर्थिक क्रियाओं में क्रियाशील जनसंख्या के प्रत्यावर्तन के साथ ही ग्राम्य जनसंख्या के नगरोन्मुख
प्रवास पर आधारित है (मिश्र 1994)। सिंह (1975) के अनुसार नगरों की उत्तरोत्तर वृद्धि जनसंख्या के उस सतत प्रवास का प्रतिफल है, जो ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे कस्बों से रोजगार तथा रहन-रखन के उच्च स्तर हेतु नगरों की ओर आकर्षित होती है।

मिश्र (1978) ने नगरीकरण के समबन्ध में विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत विचारों का संरचनात्मक रूप प्रस्तुत करते हुए कहा कि नगरीकरण की प्रक्रिया किसी भी समाज के जननीय, सामाजिक, आर्थिक, प्राविधिक व वार्षिक स्तरों में स्थानीय, वर्गीय व सामाजिक परिवर्तनों के माध्यम से व्यक्त होती है। यह परिवर्तन गाँवों की तुलना में नगरों में बढ़ते हुए जनसंख्या संकेतन को प्रदर्शित करते है।

द्वितीय तथा तृतीय क्रियाओं में लोगों की बढ़ती सहभागिता व कुछ निश्चित सामाजिक विशेषताओं को प्रगति पूर्वक अपनाना एक रूढ़वादी ग्रामीण समाज के लिए विशिष्ट है।

नगरीकरण का इतिहास (History of Urbanization)

वस्तुतः पूर्ववर्ती साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट है कि भारत के नगरीकरण का इतिहास बहुत पुराना है। मोहन जोड़ी तथा हड़प्पा की खगड़हर युक्त संरचना इस तथ्य को रहस्योद्घाटित करती है जो यहाँ के नगर अन्त व्यस्त वाणिज्यिक केंद्र थे (गोखले, 1959)। प्राचीन भारतीय नगरों का उदभव उच्च उत्पादकता वाले मैदानी क्षेत्रों में हुई। क्रिस्टोफर ने इस तथ्य को रेखा दिखाकिया कि उत्पादक भूमि की एक निश्चित मात्रा नगरीय केंद्रों के विकास में सहयोग करती है। जबकि असमान धरातलीय क्षेत्रों में नगरीकरण की मात्रा में प्रत्येक एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में विभिन्नता पाई जाती है।

वस्तुतः उत्तर देश के बुन्देलखंड में अवकंठित झांसी जनपद की भौगोलिक दशा पहले नगरीय विकास के लिए उपयुक्त नहीं थी। क्षेत्र का एक बड़ा हिस्सा जंगलों से आच्छादित तथा ऊबड़-खाबड़ धरातलीय संरचना वाला था। क्षेत्र में अधिकांशतः
आदिवासी निवास करते थे, जो मानव बसाव के विकास को नियन्त्रित करती थे।

नगरों का विकास मुख्यतः दसवीं एवं अठारहवीं शताब्दी के मध्य हुआ। यहाँ पर अनेक

नगर शाही राजगिर्यों द्वारा विकसित किए गए। नगर का विकास राजकुल की समृद्धि

पर आधारित तथा साम्राज्यों के उत्थान पतन के आधार पर नगरों का भी उत्थान

एवं पतन हुआ (पाल 1993)। उस समय के विकसित नगरों में एरिक व झांसी का

प्रमुख स्थान है। ब्रिटिश शासन काल के समय में नगरीय विकास में वृद्धि हुई।

उसका प्रमुख कारण पुरुष नर्सिंग को विस्तृत पैमाने पर विकास होना था।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात नगरीकरण की दिशा में तीव्रगति से वृद्धि हो रही है।

**विकास प्रवृत्ति (Growth Trend)**

नगरीकरण का विकास मुख्यतः आधुनिक समय में हुआ है। उसकी कालिक

प्रवृत्ति बर्तमान शताब्दी (1901-91) के प्रथम दशक से ली गई है। 1991 की

जनगणना के अनुसार झांसी जनपद में विभिन्न आकार वर्गों के 14 नगरीय केन्द्र हैं

जबकि 1901 में मध्यम श्रेणी का एक नगर बहुत नगर थे। प्रथम श्रेणी का

कोई भी नगर नहीं था। इस प्रकार विगत 10 वर्षों के तुलनात्मक विश्लेषण से यह

स्पष्ट होता है कि जनपद में नगरीकरण की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है। तथा कुल

जनसंख्या की तुलना में नगरीय जनसंख्या में तीव्रगति से विकास हुआ है। नगरीय

जनसंख्या के कालिक विकास के विश्लेषण से यह प्रकाश में आया कि सम्पूर्ण समय

में नगरीय विकास की प्रवृत्ति समान नहीं रही है। 1921 से पूर्व के दशक की तुलना

में 1921 के पश्चात के दशकों में नगरीकरण की प्रवृत्ति में स्पष्ट अन्तर देखने को

मिलता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात नगरीय जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई

है। जनपद में तहसीलबार नगरीय जनसंख्या की वृद्धि को परिशिष्ट में दर्शाया गया

है। परिशिष्ट के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सभी तहसीलों में नगरीय जनसंख्या

की वृद्धि में पर्याप्त विभिन्नतायें दृष्टिगत होती हैं। विभिन्न जनगणना अवधि में
नगरीय अधिवासों के आकार की रूपरेखा को सारिया 4.4 में दर्शाया गया है।

(1) प्रथम श्रेणी के नगर — झांसी जनपद में 1931 तक प्रथम श्रेणी का एक भी नगर नहीं था। 1941 में झांसी प्रथम श्रेणी का नगर बन गया तथा तब से 2001 तक अकेले झांसी नगर ही इस श्रेणी में है। इसकी जनसंख्या के प्रतिशत में उत्तर-चढ़ाय अवक्ष्म में विविध श्रेणी के नगरों की संख्या गाढ़ने तथा बढ़ने के कारण मिलता है।

(2) द्वितीय श्रेणी के नगर — 1931 तक झांसी द्वितीय श्रेणी का नगर था। 1941 में इसका प्रथम श्रेणी में प्रवेश हो जाने के कारण 1949 तक इस श्रेणी में कोई नगर नहीं आया।

(3) तृतीय श्रेणी के नगर — 1951 तक झांसी तृतीय श्रेणी में कोई नगर नहीं था। 1961 में मठरानिपुर इस श्रेणी में सम्मिलित हुआ तथा 1981 में अकेले ही इस श्रेणी में बना रहा। 1961 में बब्बीना कैन्ट के आगमन के कारण इस श्रेणी के दो नगर हो गए।

(4) चतुर्थ श्रेणी के नगर — 1951 तक मठरानिपुर चतुर्थ श्रेणी का नगर था। 1961 में बब्बीना को इस श्रेणी में सम्मिलित हो जाने पर इस श्रेणी के नगरों की संख्या दो हो गई। 1971 में समथर के आगमन से इस श्रेणी के नगरों की संख्या तीन हो गई। 1981 में गुरसराय, चिरगाउ, रानीपुर, व बब्बी अगार चतुर्थ श्रेणी में आने से इस वर्ग के अंतर्गत 4 नगर हो गए।

(5) पंचम श्रेणी के नगर — 1901 में समथर पंचम श्रेणी का नगर था। 1991 में रानीपुर के आगमन से इसकी संख्या दो हो गई जो 1941 तक स्थिर रही। 1951 में इस श्रेणी में तीन नगर जबकि वर्तमान समय में पाँच (मोठ, टोड़ी, फाटेहपुर, कटेसा, इरच व गरीठा) नगरीय अधिवास इस वर्ग में आते हैं।

(6) षष्ठ पंग्रह श्रेणी के नगर — झांसी जनपद में 1901 में इस श्रेणी में दो नगर (गुरसराय, चिरगाउ) थे। 1951 में बब्बीना के आगमन से इस श्रेणी में तीन नगर हो
### सारणी संख्या 4.4
#### आकारानुसार नगरों की संख्या

<table>
<thead>
<tr>
<th>नगराकार वर्ष</th>
<th>प्रथम 1,00,000 से अधिक</th>
<th>द्वितीय 50,000-100,000</th>
<th>तृतीय 20,000-50,000</th>
<th>चौथी 10,000-20,000</th>
<th>पंचम 5000-10,000</th>
<th>षष्ठ 5000 से कम</th>
<th>कुल संख्या</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1901</td>
<td>--</td>
<td>1</td>
<td>1</td>
<td>1</td>
<td>2</td>
<td>2</td>
<td>5</td>
</tr>
<tr>
<td>1911</td>
<td>--</td>
<td>1</td>
<td>--</td>
<td>--</td>
<td>2</td>
<td>2</td>
<td>6</td>
</tr>
<tr>
<td>1921</td>
<td>--</td>
<td>1</td>
<td>--</td>
<td>--</td>
<td>2</td>
<td>2</td>
<td>6</td>
</tr>
<tr>
<td>1931</td>
<td>--</td>
<td>1</td>
<td>--</td>
<td>--</td>
<td>2</td>
<td>2</td>
<td>6</td>
</tr>
<tr>
<td>1941</td>
<td>1</td>
<td>--</td>
<td>--</td>
<td>--</td>
<td>2</td>
<td>2</td>
<td>6</td>
</tr>
<tr>
<td>1951</td>
<td>1</td>
<td>--</td>
<td>--</td>
<td>--</td>
<td>3</td>
<td>3</td>
<td>8</td>
</tr>
<tr>
<td>1961</td>
<td>1</td>
<td>1</td>
<td>2</td>
<td>4</td>
<td>2</td>
<td>10</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1971</td>
<td>1</td>
<td>--</td>
<td>3</td>
<td>3</td>
<td>2</td>
<td>10</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>1981</td>
<td>1</td>
<td>--</td>
<td>1</td>
<td>5</td>
<td>4</td>
<td>2</td>
<td>13</td>
</tr>
<tr>
<td>1991</td>
<td>1</td>
<td>2</td>
<td>6</td>
<td>5</td>
<td>--</td>
<td>14</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>2001</td>
<td>1</td>
<td>--</td>
<td>--</td>
<td>--</td>
<td>--</td>
<td>--</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

*स्रोत: जिला सूचना केंद्र व सांख्यिकीय कार्यालय से प्राप्त सूचना पर आधारित।*
### सारणी संख्या 4.5

झांसी जनपद में नगरीकरण की मात्रा

<table>
<thead>
<tr>
<th>वर्ष</th>
<th>कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1901</td>
<td>15.75</td>
</tr>
<tr>
<td>1911</td>
<td>17.07</td>
</tr>
<tr>
<td>1921</td>
<td>19.39</td>
</tr>
<tr>
<td>1931</td>
<td>17.61</td>
</tr>
<tr>
<td>1941</td>
<td>18.68</td>
</tr>
<tr>
<td>1951</td>
<td>21.91</td>
</tr>
<tr>
<td>1961</td>
<td>23.83</td>
</tr>
<tr>
<td>1971</td>
<td>21.54</td>
</tr>
<tr>
<td>1981</td>
<td>38.82</td>
</tr>
<tr>
<td>1991</td>
<td>39.61</td>
</tr>
</tbody>
</table>

### सारणी संख्या 4.6

विकास खण्ड पर नगरीकरण की मात्रा 1991

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.सं.</th>
<th>विकास खण्ड</th>
<th>नगरीकरण की मात्रा</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>मोठा</td>
<td>18.77</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>चिरगाँव</td>
<td>11.71</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>बामोर</td>
<td>12.23</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>गुरसराय</td>
<td>21.01</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>बंगारा</td>
<td>14.46</td>
</tr>
<tr>
<td>6</td>
<td>मऊरानीपुर</td>
<td>33.76</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>बबीना</td>
<td>27.93</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>बड़गाँव</td>
<td>79.82</td>
</tr>
</tbody>
</table>

स्रोत: जिला सूचना केंद्र से प्राप्त ऑर्डरों द्वारा संगठित।
गए किन्तु 1961 में बबीना के चतुर्थ श्रेणी में चले जाने से इस वर्ग में 1981 तक कटेरा व गरोठा इस श्रेणी में बने रहे। 1991 में इस वर्ग के अन्तर्गत एक भी नगर नहीं हैं।

नगरीकरण की मात्रा (Degree of Urbanization)

नगरीकरण की मात्रा कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का अनुपात है। किसी क्षेत्र के नगरीकरण की मात्रा उस क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक विकास की प्रतीक होती है। सारांश 4.5 में विभिन्न दशकों के अन्तर्गत नगरीकरण की मात्रा दर्शाई गयी है। सारांश 4.5 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि झांसी जनपद में 1901 में नगरीकरण की मात्रा 15.75, 1951 में 21.91 तथा 1991 में 39.61 प्रतिशत थी।

इससे यह स्पष्ट होता है कि नगरीकरण की मात्रा में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। इसके अलावा विकास खण्ड स्तर पर भी नगरीकरण की मात्रा का विश्लेषण किया गया है (सारांश 4.6 एवं चित्र संख्या 4.3) सारांश 4.6 के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि चिरगांव बंगाला, बामोर में नगरीकरण की मात्रा क्रमशः 11.71, 12.23, 14.46 प्रतिशत है। इन विकास खण्डों में नगरीकरण की मात्रा अधिक है जो यह दर्शाती है कि यहाँ की आर्थिक संरचना कृषि प्रधान तथा परम्परागत किस्म की है व नगरीकरण प्राथमिक अवस्था में है। इसके अतिरिक्त मॉड (18.77 प्रतिशत) गुरसराय (21.01 प्रतिशत) में भी नगरीकरण की मात्रा 25.0 में कम है जिससे स्पष्ट होता है कि प्राथमिक क्रियाओं की अधिकता के कारण नगरीकरण की मात्रा का बहुत कम विकास हुआ है। इन नगरों पर फ्रांसीसी भूगोलविद री जार्ज (1970) की टिप्पणी में उचित प्रतीक होती है कि जिस क्षेत्र की नगरीय जनसंख्या कुल जनसंख्या की 25 प्रतिशत से नीचे है, उन्हें प्रारंभिक कृषि सम्पत्ति वाला क्षेत्र कहा जा सकता है। बबीना तथा मठरानीपुर विकासखण्ड में नगरीकरण का अधिक विकास हुआ है। यहाँ नगरीकरण की मात्रा क्रमशः 27.93 व 33.76 प्रतिशत है। बबीना
JHANSI DISTRICT
DEGREE OF URBANIZATION

Fig 4.3
एक छावनी केन्द्र तथा मऊसानीपुर औद्योगिक दृष्टि से विकसित है। इसलिये यहाँ पर नगरीय करण की मात्रा अधिक है। बड़ागाव विकासखंड में झांसी नगर की महत्वपूर्ण स्थित होने के कारण नगरीकरण की मात्रा अधिक है। यह क्षेत्र आर्थिक क्रियाओं के अधिक विकसित होने तथा कृष्णेतर कार्यों में अधिकांश जनसंख्या के कार्य करने के फलस्वरूप 79.82 प्रतिशत नगरीकरण की मात्रा पायी जाती है। इसलिए यहाँ तीव्र गति से नगरीकरण में वृद्धि हुई है।

**References**


2. Chandna, R.C. and Sidhu, (1980)] Introduction to Population Geography, Kalyani Publisher, New Delhi, pp. 18-19


7. भिलूरंत वृक्ष कुमार (1994). अधिवास भूगोल, कुलुम प्रकाशन अंिरा, पृष्ठ सं. 115

8. सिंग रामबली (1975), भारत में नगरीकरण की विशेषतयाँ, उत्तर भारत भूगोल, भूगोल पत्रिका, अंक 2, संख्या 2, पृष्ठ संख्या 831


10. Paul, K. (1993), पुनर्विकायायन (उत्तर) की विकास प्रक्रिया में लघु एवं मध्यम आकार के नगरों की भूमिका, अप्रकाशित शोध प्रबंध, बुनिदेशकण्ड विश्व विद्यालय शासन, पृष्ठ तंख्या — 108।


